पंचम अध्याय

उ प सं हा र

: पंचम अध्याय :
उपसंहार

प्रास्ताविक

अभिमन्यु अनत मॉरिशस के अग्रंणि रचनाकार रहे है । उन्होंने एक ओर अपने देश के साहित्य की परम्पराओं को स्वीकार कर उसे वर्तमान से जोड़ते हुए अपनी धारणाओं को स्पष्ट किया है । वे अपनी पूर्व पीढ़ी के साहित्यकारों से एक कदम निश्चित आगे चलने के लिए प्रतिबद्ध है । यही कारण है कि मॉरिशस के हिन्दी साहित्य में वे अपना एक नया काल–खण्ड़ निर्माण कर पाए हैं । मॉरिशस के हिन्दी लेखकों में अभिमन्यु अनत एकमात्र ऐसे रचनाकार है जिनकी कृतियाँ मॉरिशस की अस्मिता , संस्कृति , आधुनिक जीवन के तनावों संघर्षों एवं आस्थाओं के साथ भारतीयता को भी समान रूप से अभिव्यक्त करती हैं । वे जितने मॉरिशस के हैं , उतने ही भारतीय पाठकों के भी है । उनके साहित्य ने मॉरिशस और भारत के बीच साहित्य–सेतु बनाने का प्रयत्न किया है । वे अपने साहित्य के माध्यम से हिन्दी को विश्व रंगमंच पर भी स्थापित करते है । मॉरिशस में हिन्दी लेखकों की परम्परा में अभिम्न्यु अनत का अपना एक विशिष्ट स्थान है , जो अत्यंत महत्वपूर्ण है ।

(अ) आनिवासी भारतियों का हिन्दी साहित्य में योगदान

मॉरिशस की हिन्दी उतनी ही पुरानी है , जितना कि आप्रवासी भारतियों का मॉरिशस में पदार्पण । मॉरिशस में आप्रवासी भारतियों का आगमन 1834 ई. में व्यवस्थित रूप से प्रारम्भ हुआ । कुली मजदुरों के रूप में आये भारतियों की प्रारम्भिक दशा अत्यन्त शोचनीय रही है । ब्रिटिश शालन–काल में दास–प्रथा की समाप्ति के बाद फ्रॉन्सीसी गोरों के चीनी–उद्योग की समृद्धि के लिए एजण्टों के माध्यम से भारतियों को छल–प्रपंच तथा सोने का लालच दिखाकर मॉरिशस लाया गया । मॉरिशस में विभिन्न दारूण यन्त्रणाओं को सहते हुए भी , इन भारतियों ने अपनी भाषा–संस्कृति और धर्म की निरंतर रक्षा की ।

मॉरिशस में हिन्दी लेखकों की एक प्रदीर्घ परम्परा रही है। उसमें अभिमन्यु अनत सिर्फ सर्वश्रेष्ठ रचनाकार नहीं है ,बल्कि भारत से बाहर जो हिन्दी–प्रेमी विद्वान हिन्दी में लिख रहे है,उनमें वे ऐसे साहित्यकार हैं,जो सर्जनात्मक साहित्यकार के रूप में भारत में यशस्वी हो सके है । भारत से हजारों मिल दूर रहकर भी हिन्दी की समर्पित भाव से सेवा करनेवाले अन्य आनिवासी हिन्दी लेखकों में प्रो. वासुदेव विष्णुदयाल , ब्रजेन्द्रकुमार भगत ' मधुकर ' , मुनीश्वरलाल चिंतामणि, ठाकुरदत्त पांडेय , विष्णुदत्त मधु ' चंद्र ' , श्रीमती भानुमती नागदान, रामेदव धुरंधर , दीपचंद बिहारी , श्री जयनारायण राय , आस्तानंद सदासिंह आदि के नाम उल्लेखनीय है ।

(1) <u>काव्य साहित्य</u> : ——

मॉरिशस के हिन्दी काव्य साहित्य के अंतर्गत श्री ब्रजेन्द्र कुमार भगत , ' मधुकर ', डॉ, मुनीश्वरलाल चिंतामणि , विष्णुदत्त मधु ' चंद्र ' , ठाकुर दत्त पाण्डेय आदि कवियों के काव्यसंग्रह का समावेश होता है ।

श्री, ब्रजेन्द्र भगत ' मधुकर ' का जन्म 2 सितम्बर, 1916 को धारा नगरी , लोंग मौंटन , मॉरिशस में हुआ । वे ' त्रिवेणी ' और ' हि. प्र .स.' के संस्थापकों में से एक है । स्वतन्त्रता–संघर्ष में इनका प्रमुख साहित्यिक योगदान रहा है । विषय–वस्तु की दृष्टि से उन्होंने समाज–कल्याण , हिन्दी की प्रगति,, स्वराज्य आन्दोलन,, गोरों के अत्याचार आदि को काव्य का आधार बनाया है । इनके मॉरिशस स्वतन्त्रता से पूर्व के काव्य–संग्रहों में ' मधुपर्क ' ' वीरगाथा ', ' रागिणी ' , ' मधुकरी ' आदि उल्लेखनीय है । स्वतन्त्रता के पश्चात के काव्यसंग्रहों में ' हिन्दी गौरव–गान ' , ' जय हिन्दी ' आदि में हिन्दी प्रेम और उसके प्रचार–प्रसार की भावना है तो , ' एक कहानी कुली की ' , ' अमर कुली गाथा ' आदि में मजदुरों पर किये अन्याय हैं । उन्होंने कुल 29 काव्यसंग्रहों की रचना की ।

डॉ, मुनीश्वरलाल चितांमणि का जन्म 18 फरवरी , 1935 ई. मे त्रिओल ग्राम में हुआ । वे मॉरिशस के महात्मा–गांधी संस्थान में भाषा विभागाध्यक्ष क रूप में कार्यरत रहे हैं । इन्होंने मॉरिशस के ' हिन्दी–लेखक संघ'की स्थापणा की है । अब तक इनके दस कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं । इनका प्रथम काव्य संग्रह ' प्रथम किरण ' है जिसमें वे महात्मा गांधी जी

से प्रभावित है , तो व्दितीय काव्य संग्रह , ' शांती निकेतन की ओर ' में रवीन्द्रनाथ ठाकूर से।

स्वतनत्रता के पश्चात दो काव्य–संग्रह प्रकाशित हुए । जैसे ' नवनिर्माण की बेला ' और ' ध्वनन ' । इनमें पूर्व काल में मजदुरों पर किये अन्याय है तो दूसरी ओर मॉरिशस समाज में व्याप्त भाई–भतीजावाद , गोरे–काले के भेद आदि का वर्णन है ।

ठाकुर दत्त पाण्डेय जी का जन्म 15 अगस्त , 1934 ई. को बोवांसे मॉरिशस में हुआ । इन्होंने मॉरिशस में हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रचार प्रसार पर कार्य किया है । इन्होंने आधुनिक काल में ही काव्य–संग्रह लिखे । ' निशा ' काव्य संग्रह में कवि के प्रेम की निश्छलता का वर्णन है तो, ' पुष्पांजलि'में व्दीप की धर्म संस्कृति ,त्यौहार का तो , ' आलोक ' में बापूजी द्वारा बताए गए जीवन मूल्यों का वर्णन है । ' प्रणाम ' में तुलसीदास के प्रति श्रद्धा और डॉ. मणिलाल क त्याग संघर्षों का वर्णन है । तो ' घूमता चक्र ' में मॉरिशस समाज में व्याप्त सामाजिक–आर्थिक विषमता का वर्णन है ।

(2) <u>खंड़ काव्य</u> :—

इस विधा के अतंर्गत श्री ब्रजेन्द्र कुमार भगत 'मधुकर ', श्री. हरिनारायण सीता आदि ने लेखन किया । इसमें श्री ब्रजेन्द्र कुमार भगत ' मधुकर' ने ' एक कहानी कुली की ' खंड़काव्य लिखा । प्रस्तुत खंडकाव्य के कथा का आधार कवि के अपने पूर्वजों के मॉरिशस आगमन एवं आगामी दुख–सुख की कथा है । प्रस्तुत खंडकाव्य में कवि ने अपने पूर्वजों का अँग्रेजो से बचने के लिए एवं सोना पाने की आस में मॉरिशस जाना , वहाँ कोठियों में दिन–रात मेहनत करना फिर भी बाँसों की बरसात सहना ,अन्याय में भी अपनी भाषा ,संस्कृति की रक्षा करना आदि का काव्यमयी मार्मिक वर्णन हैं। हरिनारायण सीता ने ' मुंड़िया पहाड़ की आत्मकथा ' यह खंडकाव्य लिखा । इसमें मॉरिशस का मुंड़िया पहाड़ अपनी दारूण जीवन कथा सुनाता है ।

(3) <u>उपन्यास</u>:—

प्रस्तुत विधा के अंतर्गत प्रमुख रूप से श्री. रामदेव धुरन्धर और श्री. दीपचंद बिहारी ने लेखन किया है । श्री. रामदेव धुरंधर ने कुल पाँच उपन्यास लिखे । उनमें चार सामाजिक है

और एक ऐतिहासिक है। उन्होंने सामाजिक उपन्यासां में नारी जीवन की व्यथा एवं उसके कार्य को महत्व दिया है । जैसे ' सहमे हुए सच ' (1980) की आशा अपने पति द्वारा प्राप्त दुर्व्यवहार , स्त्री गमन से त्रस्त होकर दूसरा ब्याह करने का फैसला करती है । जब उसके पूर्व पति उसके पास वापस आ भी जाता है , लेकिन वह अपने पुनर्विवाह के फैसले पर अटल रहती है । उसे विश्वास है कि उसके जीवन का पुर्नर्विवाह यह ऐसा सत्य है,जो सहमा–सहमा नहीं है । दूसरे उपन्यास ' बनते–बिगड़े रिश्ते '(1990) की सुधा शहरी वातावरण में पली होकर भी एक ग्रामीण युवक से ब्याह कर वहाँ के वातावरण से नये रिश्ते बनाने की कोशिश करती है और खेतों में पदार्पण करती है । तीसरे उपन्यास ' बड़ी–मछली छोटी मछली ' (1983) में नायिका विनोदा के मन में उठा अन्तर्द्वन्द्व है । इंग्लैड़ं से वकालत पास कर आयी यूरोपीय सभ्यता की स्वच्छन्द विचारों की विनोदा देश की सामाजिक,,न्यायिक एवं राजनीतिक व्यवस्था से जुड़ती है और बड़ी मछली का साथ देकर छोटी मछली का शिकार कर अपने सच की हत्या करती है । किन्तु आखिर विनोदा के मन में सच–झूठ के बीच व्दन्व्द होता है और वह सत्य–मानवता की ओर झुककर मृत्यु की ओर अग्रसरित होती है । यहाँ उपन्यासकार के नारी पात्र आदर्श की ओर ही अग्रसरित होते हैं । चौथे उपन्यास ' चेहरों का आदमी '(1981) में राऊत के माध्यम सेराजनीतिक हथकण्डों का पदार्फाश किया है । पाँचवें ऐतिहासिक उपन्यास ' पूछो इस माटी से ' (1986) में मॉरिशस के ऐतिहासिक सत्य को साकार किया है । यह उपन्यास आप्रवासी भारतीय मजदुरों के दुख दर्द उन'पर हुए अन्याय की कहानी है ।

अन्य उपन्यासकार श्री. दीपचंद बिहारी ने दो उपन्यास लिखें। एक सामाजिक और एक ऐतिहासिक उपन्यास । उन्होंने सामाजिक उपन्यास ' मसीहे नरक जीते है ' (1980) में समाज सेवक डॉ. कैलाश के संघर्ष को अभिव्यक्त किया है । डॉ. कैलाश आप्रवासी जनों में व्याप्त गरीबी , कुरीतियाँ मिटाना चाहते हैं , किन्तु वे सभी क्षेत्र में पीड़ित है । वे एक मसीहा के रूप में जनता की सेवा करना चाहते है लेकिन स्वयं ही नारकीय जीवन जीते है । दूसरा उपन्यास ' ताकि वे जी सके ' (1981) उनके ही अंग्रजी उपन्यास ,' दैट अदर्स माइट लिव ' (1976) का हिन्दी अनुवाद है । जिसमें नायक मनीष जो अपने पिता की खोज में मॉरिशस आता है । उसके ही माध्यम से उपन्यासकार ने व्दीप पर स्थित भारतीय मजदुरों की दयनीयता का और उनके द्वारा किये संघर्ष का वर्णन किया है । यहाँ नायक मनीष व्दीप पर

स्थित आर्थिक , सामाजिक विषमता को मिटाना चाहता है ताकि आने वाली पीढ़ी नयी एवं बेहतर जिंदगी जी सके ।

श्री. विष्णुदत्त मधु 'चन्द्र' ने , ' फट गई धरती ' (1975) उपन्यास का लेखन किया है । उपन्यास के पूर्वार्ध में नायक–नायिका के सामाजिक विद्रोह के रूप में प्रेम–विवाह की परिणति है तो उत्तरार्ध में नारियों द्वारा नारी–आदर्श को प्रस्तुत किया है ।

(4) कहानी :—

प्रस्तुत विधा के अतर्गत श्री. मुनीश्वरलाल चिंतामणि , श्री.दीपचंद बिहारी और श्रीमती भानुमती नागदान आदि ने लेखन किया हैं ।

श्री. मुनीश्वरलाल चिंतामणि की कुछ कहानियाँ पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई,तो कुछ कहानियाँ को अन्य लेखकों ने अपनी किताबों में सम्पादित किया । जैसे ' कॉग्रेस ' पत्रिका में ' वसंत की बेटी ' , ' निर्धन साहित्यकार ' , ' मॉरिशस भूषण ' आदि कहानियाँ हैं । डॉ. राजेन्द्र अरूण द्वारा सम्पादित , ' मॉरिशस की कहानियाँ ' (1986) में ' कॉटों पर चलते हुए ' प्रकाशित हुई है । जिसमें जतन चाचा के माध्यम से आप्रवासी भारतीय मजदुरों की उस चेतना को उभारा है ,जिसके बल पर वे अपनी भाषा–संस्कृति की रक्षा कर सके । अभिमन्यु अनत द्वारा सम्पादित , ' मॉरिशसीय हिन्दी कहानियाँ ' (1987) में 'मौत का सौदागर ' कहानी प्रकाशित है । जिसमें राजनीतिक लोगों की काली करतूतों का पर्दाफाश किया हैं ।

श्री. दीपचंद बिहारी के दो कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं । जो अत्यंत महत्वपूर्ण है । जैसे 'सागर पार' और ' स्वर्ग में क्या रखा है ' (1978) । ' स्वर्ग में क्या रखा है ' कहानी–संग्रह के अंतर्गत ' गुरूजी ' , ' अगारों की चट्टान ' , ' हॅसते रहना ' आदि कहानियाँ उल्लेखनीय है ।

अन्य कहानीकारों में श्रीमती भानुमति नागदान भी मॉरिशस के प्रतिष्ठित कहानीकारों में महत्वपूर्ण है । इनका जन्म 1933 ई. रोजहिल में हुआ । ये गुजराती परिवार की भारतीय संस्कार सम्पन्न महिला है । इनका ' मिनिस्टर' कहानी संग्रह प्रकाशित है । इस कहानी संग्रह में ' मिनिस्टर ' , ' ब्राह्मण ' , ' हड़ताल ' , आदि उल्लेखनीय है । ' मिनिस्टर ' में

देहातो की आर्थिक दुरावस्था पर व्यंग्य है , ' ब्राह्मण ' कहानी में जाती के कुचक्र पर व्यंग्य है , तो ' हड़ताल ' कहानी में हड़ताल के परिणाम बताये है ।

(5) नाटक :—

नाटक विधा के अंतर्गत श्री. जयनारायण राय और श्री आस्तानंद सदासिंह के नाम लिये जा सकते है । श्री . जय नारायण राय ने 1941 में ' जीवन संगिनी ' नामक नाटक लिखा। उसका मंचन 1955 में हुआ । प्रस्तुत नाटक का मुल उद्देश्य पढ़े–लिखे मॉरिशसीय युवकों को भारतीय सामाजिक मर्यादाओं और सांस्कृतिक मूल्यों से भागने से बचाना है , इसके साथ ही भारतीय मर्यादाओं की रक्षिका एक आदर्श गृहिणी उषा के माध्यम से ' मुल्क ' में नारी–शिक्षा का माहाम्य के द्वारा कुपथगामी पति के साथ व्दन्द्व न करके उसे हृदय परिवर्तन द्वारा सुमार्ग पर लाने का प्रयत्न करना है। इस नाटक के वातावरण के अतर्गत भरत के राजकोट गॉव का मॉरिशस के क्यूर्पिप का एवं लंदन के कुछ दृश्यों का वर्णन है ।

श्री. आस्तानंद सदासिंह एक प्रभावी नाटककार है । जिन्होंने अब तक तीन नाटक लिखे । जैसे ' आवाज ' (1977) , ' तू–तू ' (1979) , ' थूक दिया भविष्य पर ' (1981) प्रथम नाटक ' आवाज ' के अंतर्गत नाटककार ने जनता के चारों ओर व्यापक आपाधापी , रिश्वतखोरी , भाई–भतीजावाद , सिफारिश , आदि के चित्र को उभार कर जनता को आवाज दी गयी है कि वे सतर्क रहें । आज एक दो व्यक्ति इसके शिकार हो रहे है , तो कल उनकी भी बारी आयेगी। यह नाटक मंचन की दृष्टि से सफल है । ' तू–तू ' नाटक में सामाजिक–राजनीतिक बुराइयों का पर्दाफाश किया हैं। जो जनता को गुमराह कर नेताओं के वर्चस्व को दृढ़ करते है , वे ही एक दिन नेताओं का कोप भाजन बनते हैं । ' थूक दिया भविष्य पर ' में भी राजनीतिक सड़ान्धता की पराकाष्ठा का चित्रण है, तथा स्वार्थ , भ्रष्टाचार के फन्दे में घुटती मरती जनता की बेबसी , लाचारी का यथार्थ वर्णन है । यहाँ यही बताया है कि राजनेताओं ने जनता के भविष्य को अंधारमय बना दिया है उस पर थूक दिया है । इनके सभी नाटकों का सफल मंचन हुआ हैं ।

(6) एकांकी :—

इस विधा के अंतर्गत श्री. ब्रजेन्द्र कुमार भगत ' मधुकर ', श्री. ठाकुरदत्त पाण्डेय ,श्री. हीरालाल लीलाधर आदि ने लेखन किया हैं।

श्री. बजेन्द्र कुमार भगत ' मधुकर 'ने' आदर्श बटी ' (1951) ,' स्वतन्त्रता का सुप्रभात ' (1953) आदि एकांकियाँ लिखी है । ' आदर्श बेटी ' में नारी महिमा का गुणगान गाया है ।' ' स्वतन्त्रता का सुप्रभात ' में भारतीय स्वतन्त्रता से प्राप्त प्रेरणा ,महात्मा गांधी जी के प्रति श्रद्धा , , भारतीय संस्कृति आदि को अभिव्यक्त किया हैं ।

श्री. ठाकुरदत्त पाण्डेय ने' पॉच एकांकी एक सपना ' (1972) नामक एक एकांकी संग्रह लिखा है । इसमें पाँच एकांकियों का संग्रह है । जैसे ' दीपक ',' कन्यादान ', 'कलियुग का बाप ' ,' सिविल मॅरिज ',' बुझ गया दीपक ' । साथ ही एक ' एक सपना ' (प्रहसन) है । इन पाँच एकांकियों में एकांकीकार ने पति–पत्नी क आपसी रिश्ते को सास–सासुर की निजी अभिलाषाओं की वेदी पर चढ़ते हुए दिखाया हैं । साथ ही भारतीय संस्कृति और धर्म में निहित गार्हस्थ्य धर्म के अनुकूल जीवन मूल्यों की स्थापना की है ।

श्री. हिरालाल लीलाधर ने ' अनोखे अतिथि ' (1974)' असहाय का सहारा' (1974) इन दो एकांकियों का लेखन किया हैं । ' अनोखे अतिथि ' में मॉरिशस समाज में स्थित वर्ण–भेद , जातीय भेद , छुआछूत की समस्या को ' रामचरित–मानस ' की ' शबरी ' इस प्रतीक पात्र के माध्यम से सशक्त ढ़ंग से उठाया हैं । ' असहाय का सहारा ' में सरदारो द्वारा मजदुरों का शोषण निहित है ।

(7) निबंध :—

प्रस्तुत विधा के अंतर्गत सिर्फ पं. वासुदेव विष्णुदयाल ने ही विस्तृत निबंध लेखन किया है । प्रो. विष्णुदयाल के निबंध आजादी से पूर्व एवं स्वतन्त्रता के पश्चात भी अनवरत प्रकाशित हाते रहे है। जैसे ' कुछ महत्वपूर्ण ग्रन्थ ' (1956)', विष्णुदयाल रचनावली ' (1959),' विष्णुदयाल लेखावली (दो भाग)' (1965) आदि निबंध आजादी के पूर्व प्रकाशित हुए तो स्वतन्त्रतां के पश्चात ' वेद भगवान' (1978) ,' गीता का अद्भूत सन्देश ' (1978) ,' वेद के अनुपम विचार ' (1980) आदि प्रकाशित हुए । ' वेद भगवान बोले ' में धर्म दर्शन , मनोविज्ञान , अध्यात्म इन विषयों पर

निबंध है । इनके निबंधों पर भारतीय अध्यात्म , धर्म , दर्शन , संस्कृति , ग्रंथ आदि का प्रभाव है ।

अन्य निबंधकारों में जैसे श्री. रामदेव धुरंधर , डॉ. मुनिश्वरलाल चितामणि , पंडित ठाकुरदत्त पांण्डे आदि ने कम अधिक मात्रा में निबंध लेखन किया है ।

(8) जीवनी :—

इस विधा के अंतर्गत प्रो. वासुदेव विष्णुदयाल ने ' महात्मा और सन्त ' (1955) नामक जीवनी लिखी। जिसमें महात्मा गांधी एवं सन्त विनोभा भावे के जीवन प्रसंगों को प्रस्तुत किया है ।

श्री. मुनीश्वर लाल चिंतामणि ने एक निबंधात्मक जीवनी ' रवीन्द्रनाथ ठाकुर ' नाम से लिखी । श्री. टेकलाल गणेश ने ' डॉ. शिवसागर रामगुलाम ' (1969) नामक जीवनी लिखी। इसमें डॉ. रामगुलाम के कुली–परिवार में जन्म से लेकर मॉरिशस के प्रधानमन्त्री बनने तक की महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं । अन्य भी अनेक जीवनीकारो ने इस विधा में लेखन किया हैं ।

अतः उपर्युक्त विस्तृत विवेचन के पश्चात स्पष्ट होता है कि आभिमन्यु अनत के साथ–साथ मॉरिशस में कई ऐसे आनिवासी भारतीय लेखक है, जिन्होंने मॉरिशस में रहकर हिन्दी–साहित्य की सेवा की है ।

(ब) आनिवासी हिन्दी लेखक और अभिमन्यु अनत

मॉरिशस में आनिवासी भारतीय हिन्दी लेखकों के हिन्दी साहित्य में दिए हुए योगदान के विस्तृत विवेचन के पश्चात अब यहाँ श्री. अभिमन्यु अनत और अन्य आनिवासी भारतीय लेखकों के हिन्दी –साहित्य में तुलना करने का प्रयास किया गया हैं । यह तुलना विशेष रूप से अभिमन्यु अनत के हिन्दी–साहित्य में और उनके समकालीन रचनाकारों के हिन्दी –साहित्य में की गयी है । अतः यहाँ विधा अनुसार अभिमन्यु अनत और अन्य आनिवासी भारतीय रचनाकारों के 1968 ई. में और उसके बाद प्रकाशित हिन्दी साहित्य में तुलना प्रस्तुत है ।

(1) काव्य साहित्यः—

काव्य–साहित्य के अंतर्गत यहाँ मुनीश्वरलाल चिंतामणि , श्री. ठाकुरदत्त पाण्डेय ,श्री. विष्णुदत्त मधु 'चन्द्र 'और श्री. अभिमन्यु अनत के काव्य में निहित अंतर को संक्षिप्त रूप में अभिव्यक्त किया गया है ।

डॉ. मुनीश्वरलाल चिंतामणि के काव्य पर रविन्द्रनाथ ठाकुर एवं मॉरिशस के इतिहास का प्रभाव है । तो श्री. ठाकुरदत्त पाण्डेय की कविताओं पर महात्मा गांधी जी और तुलसीदास का प्रभाव है । अभिमन्यु अनत के काव्य पर जन्मजात सांस्कारिक विद्रोही चेतना एवं समाज–परिवेशजन्य स्वयंभू चेतना का प्रभाव है ।

डॉ.मुनीश्वरलाल चिंतामणि ने स्वतन्त्रता के पश्चात दो काव्य संग्रह लिखें । जैसे , 'नवनिर्माण की बेला ' इसमें छः कविताएँ हैं ।' ध्वनन ' काव्यसंग्रह में 37 कविताएँ है। श्री. ठाकुरदत्त पाण्डेय ने पाँच काव्य संग्रह लिखें । जैसे ,' निशा ',' पुष्पांजलि ',' आलोक ',' प्रणाम ',' धूमता चक्र ' । पहले काव्य संग्रह में कुल आठ कविताएँ है , दूसरा बाल साहित्य है , तीसरे में ग्यारह कविताएँ ,तो चौथे में चार और पाँचवे काव्य संग्रह में पंद्रह कविताएँ है । विष्णुदत्त मधु ' चन्द्र ' ने एक ही ' हास्य वाटिका ' नामक काव्य संग्रह लिखा । किन्तु इसमें 32 कविताएँ है । जहाँ तक अभिमन्यु अनत का स्वाल है , उन्होंने विस्तृत रूप मे कविताएँ लिखी । उन्होंने तीन व्यापक काव्य–संग्रह लिखे । पहले काव्य संग्रह ' नागफनी में उलझी सॉसें ' में कुल चालीस कविताएँ है तो दूसरे काव्य संग्रह ,' कैक्टस के दॉत ' में कुल 88 कविताएँ हैं । तो तीसरे काव्यसंग्रह ,' एक डायरी बयान ' में कुल 93 कविताएँ हैं । अतः यहाँ स्पष्ट है कि अन्य कवियों की तुलना में अभिमन्यु अनत ने विस्तार से काव्य लेखन किया है।

काव्य–विषय वस्तु का जब विचार किया जाता है , तब स्पष्ट होता है कि ठाकुरदत्त पाण्डेय ने और विष्णुदत्त मधु ' चन्द्र'ने उन गंभीर विषयों पर काव्य लेखन नहीं किया है जिन पर अभिमन्यु अनत ने किया है । ठाकुरदत्त पाण्डेय ने अपने काव्य–विषय के लिए अपने प्रेम की निश्छलता , बालकों को मॉरिशस की संस्कृति ,भाषा का परिचय देना , आदि का स्वीकार किया है । विष्णुदत्त मधु ' चन्द्र ' ने लोकरंजनार्थ हल्के–फुलके व्यंग्य किये । किन्तु मुनीश्वर लाल चिंतामणि और अभिमन्यु अनत के काव्य–विषय वस्तु को देखा जाए तो दोनों कवियों ने मॉरिशस के दर्दनाक इतिहास पर और स्वतन्त्रता के पश्चात समाज में व्याप्त

विषमताओं पर काव्य लेखन किया । परन्तु यहाँ महत्वपूर्ण बात यह है कि ,अभिमन्यु अनत ने जितने विस्तार के साथ उपर्युक्त विषयों का चित्रण किया है ,उतनी ही विस्तारता से मुनीश्वर लाल चिंतामणि ने चित्रण नहीं किया है । मुनीश्वरलाल चिंतामणि ने अपने पहले काव्य संग्रह 'नवनिर्माण की बेला ' के माध्यम से मॉरिशस समाज में व्याप्त मुनाफाखेरी ,भाई–भतीजावाद , जॉति–पॉति ,गोरे–काले के भेद,अशांति से मानवता की मुक्ति करना चाहते हैं । तो दूसरे काव्यसंग्रह ,' ध्वनन ' में वे मॉरिशस के दर्दनाक इतिहास को प्रस्तुत करते हैं । किन्तु अभिमन्यु अनत ने उपर्युक्त विषयों के साथ–साथ राजनीतिक अव्यवस्था ,मालिक–मजदूर के बढ़ते अन्तर ,पूँजीवादी व्यवस्था आदि पर विस्तार के साथ व्यंग किया हैं । उन्होंने अपने तीनों काव्य–संग्रह में सामाजिक ,आर्थिक ,राजनीतिक विषमताओं का चित्रण किया हैं । अतः स्पष्ट है अभिमन्यु अनत ने अन्य कवियों की तुलना में अत्यंत गंभीर विषयों पर ,विस्तार के साथ काव्य–लेखन किया है। उन्होंने अपने काव्य में अपनी अनुभूतियों को ही चित्रित किया है । परिणाम स्वरूप उनके काव्य में विश्वसनीयता दिखाई देता है ।

कवियों की भाषा–शैली का विचार करे तो ठाकुर दत्त पाण्डेय ने अपनी कुछ कविताओं की अभिव्यक्ति के लिए आत्मकथात्मक एवं सम्बोधन शैली का प्रयोग किया है । जैसे' निशा ' काव्य संग्रह की सभी कविताओं के लिए आत्मकथात्मक एवं सम्बोधन शैली का प्रयोग किया है। तो ' धूमता चक्र ' में सांस्कृतिक ,पौराणिक प्रतीक का आश्रय लिया है । मुनीश्वर चितांमणि ने ' ध्वनन ' काव्य संग्रह में विविध बिम्ब ,उपमान ,प्रतीक ,पौराणिक –ऐतिहासिक मिथकों का आश्रय लिया है । इन्होने सरल–सुबोध शैली का प्रयोग किया है । किन्तु अभिमन्यु अनत की कविताओं में बाप्र बार 'कुछ निश्चित सम्बोधन का प्रयोग हुआ है । जैसे ,' इतिहास ' ' सूरज ' , 'नियति ' एवं ' मुड़िया पहाड़ ' ये कवि के प्रिय सम्बोधन रहे है । साथ ही इन्होंने रूपक ,उपमा ,अनुप्रास अलंकारों का प्रयोग भी किया है । उन्होंने अपने तीसरे काव्य–संग्रह ,'एक डायरी बयान ' का लेखन डायरी–शैली में किया है । सिर्फ अभिमन्यु अनत ने ही हिन्दी में कविता लेखन के लिए डायरीशैली का प्रयोग किया है। उनके द्वारा किया गया यह कार्य (उत्कृष्ट प्रयोग) अविस्मरणीय है । उन्होंने ज्यादातर लधु–कविताएँ लिखी हैं। इनकी कविताएँ विचार प्रधान है । उन्होंने अपने काव्य में मॉरिशस की समस्याओं को इतनी गहनता से चित्रित किया है कि उनकी कविताओं में व्यक्त आम आदमी की पीड़ा से मुक्ति की

कामना विश्वमानव की पीड़ा से मुक्ति की कामना के रूप में व्यजित होती है। अतः यहाँ यह स्पष्ट है अन्य कवियों की तुलना में अभिमनयु अनत ने ही संख्यात्मक एवं गुणात्मक दृष्टि से ही व्यापक काव्य–लेखन किया हैं ।

(2) उपन्यास–साहित्य :—

यहाँ उपन्यास–विधा के अंतर्गत रामदेव धुरंधर , दीपचन्द बिहारी , विष्णुदत्त मधु 'चंन्द्र 'और अभिमन्यु अनत के उपन्यास–साहित्य में तुलना प्रस्तुत है ।

मॉरिशस की स्वतन्त्रता के पश्चात ही मॉरिशस के सभी उपन्यासों का प्रकाशन हुआ है। इनमें रामदेव धुरंधर ने चार सामाजिक उपन्यास , एक ऐतिहासिक उपन्यास लिखा । दीपचंद बिहारी ने एक सामाजिक , एक समाजैतिहासिक उपन्यास लिखा । तो विष्णुदत्त मधु 'चंन्द्र ' ने सिर्फ एक सामाजिक उपन्यास लिखा । किन्तु इन प्रकाशित उपन्यासों में सर्वाधिक लेखन–कार्य –संख्यात्मक एवं गुणात्मक , विषय वैविध्य एवं शिल्प प्रयोग की दृष्टि से मॉरिशस के कथा–सम्राट अभिमन्यु अनत ने ही किया हैं । उन्होंने कुल मलाकर तेईस उपन्यास लिखें । उनमें सोलह सामाजिक , तीन ऐतिहासिक , दो राजनीतिक ,एक विचारप्रधान और एक बाल उपन्यास है ।

उपन्यासों के विषय के बारे में देखा जाए तो यह स्पष्ट होता है कि रामदेव धुरंधर और दीपचन्द बिहारी ने मॉरिशस के अतीत का चित्रण अपने उपन्यासों में किया है। किन्तु थोड़ा आगे जाकर रामदेव धुरंधर ने मॉरिशस समाज में व्याप्त राजनीतिक भ्रष्टाचार एवं नारी पीड़ा को चित्रित किया है । विष्णुदत्त मधु 'चन्द्र 'ने भी नारी के माध्यम से नये आदर्श प्रस्तुत किये है । किन्तु अभिमन्यु अनत ने अपने उपन्यासो में मॉरिशस की विविध समस्याओं का चित्रण कर , मॉरिशस समाज को ही साकार किया है । उन्होंने अपने उपन्यासों में मजदुरों का संघर्ष , गोरे–काले के रंग भेद के विरोध , धनी–गरीब के बीच उभरते अन्तर , आजादी के बाद आजादी के मूल्यों का हनन , राजनीतिक वेश्यावृत्ति , भ्रष्टाचार , विसंस्कृतिकरण , फिजूलखर्ची , महँगई , दुषित भाषा नीति , बेकारी , जाति–पॉति का कुचक्र , भाई–भतीजावाद आदि आजादी के बाद की विषमताओं का और व्दीप के दर्दनाक इतिहास का मार्मिक चित्रण किया हैं ।

उपन्यास में चित्रित नारी–पात्रों को दखा जाए तो स्पष्ट होता है कि रामदेव धुरंधर के नारी पात्रों में दृढ़निश्चय एवं विश्वास , सत्य–मानवता ,खेती के प्रति प्रेम है । किन्तु अभिमन्यु अनत के उपन्यासों के नारी – पात्रों का जीवन अत्यंत संघर्षमयी है । वे संघर्ष में ही जीवन की सार्थकता मानती है । उनके नारी पात्र कही आदर्श प्रेम ,त्याग ,स्नेह ,विश्वास ,आशा की ज्योति प्रज्वलित करती है , तो कही नायक के संघर्ष को अपना संघर्ष मानकर उसके संघर्ष को सार्थक बनाती है । वे मॉरिशस की कृषि–संस्कृति का आदर कर खेतों में काम करती है । अभिमन्यु अनत ने अपने नारी पात्रों को हमेंशा से ही संघर्ष करते हुए दिखाया है । यह नारी संघर्ष का रूपअन्यत्र दिखाई नहीं देता।

मॉरिशस के उपन्यास साहित्य में गिने–गिनाये कुल चार ऐतिहासिक उपन्यास दिखाई देते है । इनमे से तीन उपन्यास अभिमन्यु अनत के है । जैसे ,'लाल पसीना ',' गान्धी जी बोले थे ',' और पसीना बहता रहा ' । रामदेव धुरंधर का एक' पूछो इस माटी से ' ऐतिहासिक उपन्यास है ।' लाल पसीना 'उपन्यास अपने अन्त में' सम्पूर्ण होते हुए भी संघर्ष की मॉग करता है । किन्तु ' पूछो इस माटी से ' का अन्त संघर्ष,की समाप्ति की घोषणा करता है । अभिमन्यु अनत के तीनों ऐतिहासिक उपन्यासों में संघर्ष की श्रृखला दिखाई देती हैं।

दीपचंद बिहारी ने अपने दो उपन्यासों में , जैसे' मसीहे नरक जीते हैं ' और' ताकि वे जी सके ' में महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख होते हुए भी, अभिमन्यु अनत के ऐतिहासिक उपन्यासों जैसा प्रभाव नहीं डालते ।

अतः स्पष्ट है अभिमन्यु अनत ने ही स्वतन्त्रता के पश्चात उपन्यास–विधा की मौलिक उद्भावना ,उसके पल्लवन , पुष्पन ,विकसन और उसकी समृद्ध परम्परा को पुष्ट किया ।

(3) <u>कहानी–साहित्य</u> :—

यहॉ कहानी विधा के अंतर्गत मुनीश्वरलाल चिंतामणि , दीपचंद बिहारी ,भानुमती नागदान और अभिमन्यु अनत के कहानी लेखन में निहित अंतर को प्रस्तुत किया है ।

कहानी लेखन में संख्यात्मक दृष्टि से देखा जाए तो मुनीश्वरलाल चितामणि ने कहानी–लेखन बहुत कम किया है । शुरू में' क्रांग्रेस ' पत्रिका में कहानी लेखन किया । फिर इनकी कुछ कहानियों कों जैसे ' कॉटो पर चलते हुए ' को डॉ. राजेन्द्र अरूण द्वारा तो

' मौत का सौदागर ' को अभिमन्यु अनत द्वारा सम्पादित किया । दीपचंद बिहारी के दो कहानी–संग्रह जैसे ' सागर पार ' ' स्वर्ग में क्या रखा है ' है । पहले कहानी संग्रह में सात तो दूसरे कहानी संग्रह में बारह कहानियों का संग्रह है । श्रीमती भानुमति नागदान का एक ही ' मिनिस्टर ' नामक कहानी संग्रह है । तो कुछ कहानियाँ पत्रिकाओं में प्रकाशित है । किन्तु अभिमन्यु अनत के कहानी–लेखन पर विचार किया जाए है तो स्पष्ट होता है कि उन्होंने सर्वाधिक कहानी–लेखन किया है । उनकी लगभग तीन सौ कहानियाँ पत्र–पत्रिकाओ में प्रकाशित हैं । उनके अन्य कहानिकारों की तुलना में चार बड़े कहानी–संग्रह है । जैसे , 'खामोशी के चीत्कार ' , इसमें कुल तेरह कहानियाँ हैं । ' इंसान और मशीन ' में कुल चौवालीस लघुकथाएँ है तो ' वह बीच का आदमी ' में कुल अटठारह और ' एक थाली समन्दर ' में कुल चौबीस कहानियाँ संगृहीत है ।

कहानी विषय वस्तु की दृष्टि से देखा जाए तो, मुनीश्वरलाल चिंतामणि ने आप्रवासी भारतीय श्रमिकों का सामाजिक , सांस्कृतिक जीवन एवं वहाँ व्याप्त राजनीतिक कटुता पर संक्षिप्त रूप में कहानी लेखन किया है । दीपचंद बिहारी ने किसान और मजदूर का संघर्षमय जीवन , प्रेम की मिठास , नारी पीड़ा , शोषण के विरूद्ध लडते हुए मनुष्य का स्वर आदि पर लेखन किया है । श्रीमती भानुमति नागदान ने मॉरिशस समाज में व्याप्त राजनीतिक कटुता , जाति–पाँति के कुचक्र , पति–पत्नी के बीच बढ़ता तनाव आदि पर कहानी लेखन किया है । किन्तु अभिमनयु अनत के कहानी लेखन का विषय विस्तार अन्यों की तुलना में काफी व्यापक है।

उन्होंने मॉरिशस की विविध समस्याओं को विस्तार से चित्रित किया है । उन्होंने मॉरिशस की अभावमयी जिन्दगी एवं राजनीतिक खोखलेवाली , वहाँ व्याप्त भूख , बेकारी , भ्रष्टाचार , रंगभेद , पति–पत्नी के बनते–बिघड़ते रिश्ते , नारी का अर्तव्दन्व्द , उसकी पीड़ा , पर्यटकों द्वारा उनका शोषण , सांस्कृतिक समस्या आदि विषयें पर कहानी लेखन किया । उन्होंने खासकर स्वतन्त्रता के पश्चात मॉरिशस समाज में व्याप्त आर्थिक , साामजिक , राजकीय , सांस्कृतिक विषमताओं , विसंगतियों पर तिखें व्यग्य किये हैं । उन्होंने इतिहास की यातनाओं से तपे हुए तथा समाज से टक्कर लेनेवाले लोगों के संघर्ष के प्रण को भी वाणी दी है । वे युवा आक्रोश को महत्व देते हैं । अभिमन्यु अनत ने अपनी कहानियों में अपने अनुभव बताये है । उनका इस

संदर्भ में कहना है, 'मैंने जो भी कहानियाँ प्रस्तुत की है उन सभी को बड़े नजदीक से देख एवं महसूस कर और पूरी ईमानदारी के साथ लिखने की कोशिश की है ।'

अभिमन्यु अनत के कहानी–लेखन को देखते हुए स्पष्ट होता है कि अन्यों की तुलना में उनका कहानी लेखन अत्यंत व्यापक मार्मिक एंव अपने आप में विश्वसनीयता लिए हुए हैं।

(4) नाटक विधा :—

स्वातन्त्र्योत्तर कालीन नाट्य साहित्य में अभिमन्यु अनत और आस्तानंद सदासिंह ने ही नाट्य लेखन किया है । अतः इनके नाटक लेखन में निहित अंतर प्रस्तुत है ।—

नाट्य लेखन में आस्तानंद सदासिंह ने कुल तीन नाटकों का लेखन किया है । जैसे 'आवाज', 'तू–तू', 'थुक दिया भविष्य पर' । किन्तु अभिमन्यु अनत ने पाँच नाटकों का लेखन किया हैं । जैसे 'विरोध', 'तीन दृश्य', 'गूँगा इतिहास', 'रोक दो कान्हा', 'भरत सम भाई' ।

नाट्य विषय वस्तु में आस्तानन्द सदासिंह ने मुख्य रूप सें मॉरिशस की आजादी के पश्चात मॉरिशस समाज में व्याप्त राजनीतिक अवमूल्यन और उससे त्रस्त दयनीय जनता का चित्रण किया हैं । वे अपने नाटकों द्वारा आम–आदमी को राजनीतिक अव्यवस्था से सतर्क रहने के लिए कहते हैं।किन्तु आस्तानन्द सदासिंह की तुलना में अभिमन्यु अनत का नाट्य विषय विस्तार काफी व्यापक है । क्योंकि अभिमनयु अनत ने एक ओर आप्रवासी भारतीय मजदुरों पर मालिकों द्वारा किये जुल्मों का, मजदुरों के संघर्ष की प्रकिया का चित्रण कर, मॉरिशस के गूँगे इतिहास को वाणी दी हैं, तो वही दूसरी ओर मॉरिशस की स्वतन्त्रता के पश्चात मॉरिशस समाज में व्याप्त सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक विषमता एवं विसंगति पर गहरा व्यंग्य किया हैं । तो कही वे युद्ध और शान्ति की समस्या को महाभारत के आधार पर समझाते है तो कही राम–भरत के प्रेम की महिमा का गुणगान करते हैं ।

उपर्युक्त दोनों नाटककारों के नाटक रंगमंचीयता की दृष्टि से सफल नाटक है किन्तु विषय–वस्तु की दृष्टि से सिर्फ अभिमन्यु अनत के नाटकों का विषय विस्तार व्यापक हैं ।

(5) एकांकी :—

यहाँ एकांकी विधा के अंतर्गत ठाकुरदत्त पाण्डेय, हीरालाल लीलाधर और अभिमन्यु अनत के एकांकी लेखन में अंतर प्रस्तुत है ।

एकांकी विधा के अंतर्गत ठाकुरदत्त पाण्डेय ओर हीरालाल लीलाधर दोनों ने एक–एक एकांकी संग्रह का लेखन किया है। ठाकुरदत्त पाण्डेय के ' पाँच एकांकी एक सपना ' एकांकी संग्रह में कुल पाँच एकांकियाँ और एक प्रहसन संग्रहीत हैं । तो हीरालाल लीलाधर के ' अनोखे अतिथि ' में दो एकांकियाँ संग्रहीत हैं । किन्तु अभिमन्यु अनत ने स्वतन्त्र रूप से एकांकी संग्रह का लेखन नहीं किया है, तो उन्होंने अपनी एक दो एकांकियेां को अपनी पुस्तक ' आत्म–विज्ञापन ' में प्रकाशित किया, तो एक एकांकी को ' वसन्त ' पत्रिका में ।

विषय–वस्तु की दृष्टि से ठाकुरदत्त पाण्डेय ने ' पाँच एकांकी एक सपना ' इस एकांकी संग्रह में भारतीय संस्कृति और धर्म में निहित गार्हस्थ्य धर्म को चित्रित किया है । तो हीरालाल लीलाधर ने ' अनोखे अतिथि ' एकांकी संग्रह में एक ओर समाज में व्याप्त वर्ण एवं जातीय भेद–भाव पर प्रहार किया हैं, तो दूसरी ओर मजदूर के संघर्ष को आभार में बदलता दिखाया है । किन्तु अभिमन्यु अनत ने अपने दोनों ऐतिहासिक एकांकियेां, जैसे ' मॅरिशा–गवाही देना ', ' महामारी ' दोनों में आप्रवासी भारतीय मजदुरों के संघर्ष के प्रण को जारी रखते हुए दिखाया है । उन्होने अन्य एकांकीकारों की तुलना में मॉरिशस के इतिहास के यथार्थ सत्य पर प्रभावी रूप से लेखन किया हैं । इसके साथ ही वे आधुनिक युग में हो रहे वैज्ञानिक खोज के दुष्परिणामों का भी चित्रण करते हैं ।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि भले ही अभिमन्यु अनत ने स्वतंत्र रूप में एकांकी संग्रह न लिखा हो फिर भी उनकी अन्यत्र प्रकाशित एकांकियाँ अन्य एकांकीकारों की तुलना में प्रभावी सिद्ध होती है ।

अभिमन्यु अनत ने अन्य सभी विधाओं में जैसे जीवनी, निबंध, संस्मरण, यात्रा–वर्णन, डायरी लेखन, आत्मकथा, रेखाचित्र आदि में भी लेखन किया है । जीवनी विधा का लेखन

स्वतन्त्र रूप से किया है किन्तु अन्य विधाओं (निबंध ,संस्मरण ,यात्रा वर्णन ,डायरी लेखन , आत्मकथा ,रेखाचित्र) में किया हुआ लेखन उनकी किताब 'आत्म–विज्ञापन' में संगृहीत है ।

अतः आनिवासी भारतीय लेखकों के उपर्युक्त सभी विधाओं में किये हुए लेखन के अध्ययन के उपरांत निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि अभिमन्यु अनत की तरह अन्य किसी भी आनिवासी भारतीय रचानकार ने उपर्युक्त सभी विधाओं में लेखन कार्य नहीं किया है । एकमात्र अभिमनयु अनत ने ही उपर्युक्त सभी विधाओं में कम–अधिक मात्रा में लेखन किया है ।

अभिमन्यु अनत के उपर्युक्त सभी विधाओं में किये हुए लेखन के आधार पर स्पष्ट होता है कि एक ओर उनके साहित्य में मॉरिशस का दर्दनाक इतिहास झलकता है ,तो दूसरी ओर वे अपनी भारतीय संस्कृति , धर्म ,भाषा आदि के प्रति श्रद्धा व्यक्त कर उसकी सुरक्षा के लिए भारतियों को सतर्क करते है । उन्होंने हमेशा से ही अपने साहित्य में संघर्ष की प्रक्रिया को जारी रखा है । इनके साहित्य में अन्य आनिवासी भारतीय रचनाकारों की तुलना में मॉरिशस समाज पूरी व्यापकता के साथ प्रभावी रूप में साकार हुआ है । इसी कारण डॉ. श्यामधर तिवारी का इनके साहित्य के बारे में कहना है कि , अगर किसी ने मॉरिशस नहीं देखा है तो वे अभिमन्यु अनत का साहित्य जरूर पढ़े । अतः यहाँ अन्य आनिवासी भारतीय रचनाकारों की तुलना में अभिमन्यु अनत के साहित्य की श्रेष्ठता सिद्ध होती है ।

अभिमन्यु अनत ने विस्तृत एवं मार्मिक साहित्यिक लेखन कर हिंदी साहित्य को तो समृद्ध किया ही है किन्तु उनके साथ अन्य आनिवासी भारतीय रचनाकारों का हिन्दी साहित्य में दिया हुआ साहित्यिक योगदान भी भुलाया नहीं जा सकता ।

(क) अभिमन्यु अनत का औपन्यासिक योगदान

अभिमन्यु अनत के सभी उपन्यासों का प्रकाशन मॉरिशस की स्वतन्त्रता के पश्चात ही हुआ है । मॉरिशस के सभी उपन्यासों का प्रकाशन स्वतंत्रता के पश्चात ही हुआ है । इसमें अभिमन्यु अनत ने सर्वाधिक लेखन कार्य किया है । इसी कारण इस युग (1968 से अब तक) को 'अनत युग' कहा जाता है ।

अभिमन्यु अनत ने अपने उपन्यासों में एक ओर मॉरिशस के बरसो पुराने , दर्दनाक गूँगे इतिहास को , मजदुरों के संघर्ष को वाणी दी है तो दूसरी ओर स्वतंत्रता के पश्चात मॉरिशस समाज में व्याप्त सामाजिक , आर्थिक , राजनीतिक विषमता को मार्मिकता से प्रस्तुत किया है । उन्होंने अपने उपन्यास साहित्य में विविध प्रकार के उपन्यासों का लेखन किया है । जैसे सामाजिक , राजनीतिक , ऐतिहासिक ,विचार- प्रधान मनोवैज्ञानिक , शिल्प–प्रयोगवादी उपन्यास आदि । उन्होंने कुल तेईस उपनयास लिखें । उसमें सोलह सामाजिक , चार राजनीतिक , तीन ऐतिहासिक ,एक विचार–प्रधान मनोवैज्ञानिक और एक बाल–उपन्यास है ।

अभिमन्यु अनत के ज्यादातर उपन्यास सामाजिक कोटि के अंतर्गत आते हैं । इसमें उन्होंने मॉरिशस समाज की विविध समस्याओं का चित्रण किया हैं । सामाजिक उपन्यास के अंतर्गत ' और नदी बहती रही ' , ' आन्दोलन ' ,' एक बीधा प्यार ' , ' जम गया सूरज ' , ' तीसरे किनारे पर ' ,' चौथा प्राणी ' , ' तपती दोपहरी ' , ' कुहासे का दायरा ' ,' शेफाली ' , 'हड़ताल कल होगी ' , ' अपनी अपनी सीमा ' , ' पर पगड़डी नहीं मरती ' , ' फैसला आपका ' ' मार्कट्वेन का स्वर्ग ' , ' मुड़िया पहाड़ बोल उठा ' , ' शब्द भंग ' आदि उपन्यास आते हैं । जो मॉरिशस समाज के एक रूप को पाठकों के सामने रखते हैं । सामाजिक उपन्यासों में मुख्य रूप से जाती भेद , वर्ण भेद , प्रेम विवाह की समस्या , मालिक मजदुरों में सामाजिक , आर्थिक भेदभाव , तज्जन्य संघर्ष , बेकारी , महँगाई , भाई–भतीजावाद आदि के विरोध में उठता युवा आक्रोश , नारी पीड़ा , पर्यटकों से उत्पन्न विविध समस्याएँ , मॉरिशस की कृषि–संस्कृति आदि को चित्रित कर संघर्ष की प्रकिया को जारी रखा है ।

अभिमन्यु अनत ने अपने राजनीतिक उपन्यासों में मॉरिशस देश की राजनीतिक अव्यवस्था और उससे उत्पन्न अनेक समस्याओं का चित्रण किया हैं । इसके अतर्गत ' मुड़िया पहाड बोल उठा ' , 'चुन–चुन चुनाव ' ,' शब्द भंग ' ,' आन्दोलन ' आदि उपन्यास आते हैं । इन उपन्यासों में एक ओर भ्रष्ट राजनेताओं की कुटनीति, मुनाफाखोरी है तो वही दुसरी ओर आदर्श नारी नेता है,जो जनता को उनके हक के लिए अगाह कर,राजनीति की भ्रष्टनीति का भाण्डा फोड़ करती है और आम आदमी क संघर्ष को महत्व देती हैं ।

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि उन्होंने तीन महत्वपूर्ण ऐतिहासिक उपन्यास लिखें । जो मॉरिशस की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखे गये है ।

इसमें आप्रवासी मजदुरों का संघर्ष है, जिससे मॉरिशस को आजादी प्राप्त हुई । इसमें 'लाल पसीना', 'गांधी जी बोले थे', 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास आते हैं । इसमें अभिमन्यु अनत के पूर्वजों द्वारा किये संघर्ष भी निहित है । विचार–प्रधान मनोवैज्ञानिक उपन्यास के अतर्गत 'अपनी ही तलाश' उपन्यास आता है । जिसमें चिंतन की प्रधानता है।

अभिमन्यु अनत ने अपने उपन्यासों में नव–नवीन शिल्प–प्रयोग किये है । जैसे, 'फैसला आपका' इस उपन्यास में प्रिया सिबालिक (नायिका) के समग्र केस को उसके मानसिक संघर्ष, उसकी कल्पना के माध्यम से प्रस्तुत किया है ।जहाँ पाठक उस कल्पना को यर्थाथ मान बैठते है।यह इस उपन्यास की विशेषता है ।

अभिमन्यु अनत के उपर्युक्त उपन्यासों में से अधिकतर उपन्यासों का अंत एक संघर्ष, एक आशा के रूपें हुआ है । अभिमन्यु अनत अपने उपन्यासों में प्रश्न उत्पन्न करते है. और उसके उत्तर पाठकों से चाहते है । इसके अंतर्गत 'तपती दोपहरी', 'हड़ताल कल होगी', 'लाल पसीना', 'शब्द भंग', 'फैसला आपका' आदि उपन्यास आते हैं । अभिमन्यु अनत संवाद–कौशल्य में भी निपुण है। उन्होंने अपने उपन्यासों में जहाँ जहाँ भोजपुरी, फ्रेन्च वाक्य प्रस्तुत किये है, वहीं तुरन्त नीचे उनका हिन्दी अनुवाद दिया है ।

अतः उपर्युक्त विस्तृत विवेचन के पश्चात निष्कर्ष रूप कहा जा सकता है कि अभिमन्यु अनत का हिन्दी साहित्य में दिया हुआ औपन्यासिक योगदान अत्यन्त मूल्यवान है । उन्होंने अन्य आनिवासी भारतीय रचनाकारों की तुलना में अधिक उपन्यास लेखन किया है । जो गुणात्मक, संख्यात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण है । उन्होंने भारत से कोसो दूर रहे आनिवासी भारतियों की पीड़ा को विश्व–रंगमंच पर प्रस्तुत किया। अभिमन्यु अनत ने ही मॉरिशस के हिन्दी साहित्य का प्रथम उपन्यास 'और नदी बहती रही' लिखा है । अतः स्पष्ट है उन्होंने ही मॉरिशस की स्वतन्त्रता के पश्चात उपन्यास विधा की मौलिक उद्भावना, उसके पल्लवन, पुष्पन, विकसन और उसकी समृद्ध परम्परा को पुष्ट किया है।

(ड) अभिमन्यु अनत और वर्ग संघर्ष

अभिमन्यु अनत ने अपने पुर्वज,जो मॉरिशस में आनिवासी भारतीय मजदूर थे । उन्की पीड़ा एवं उनके संघर्ष को अच्छी तरह से जाना एवं समझा है । साथ ही उसे मानसिक–स्तर पर जीया भी है । परिणाम स्वरूप वे मॉरिशस में रह रहे आनिवासी भारतीय मजदुरों की पीड़ा एवं संघर्ष का मार्मिक चित्रण करने में सक्षम सिद्ध हुये हैं ।

अभिमन्यु अनत ने अपने उपन्यासों में ' वर्ग संघर्ष ' को अपना उपजीव्य माना है । उन्होंने अपने कुछ उपन्यासों को छोड़ अन्य सभी उपन्यासों में मालिक–मजदूर में सामाजिक, आर्थिक भेदभाव,तज्जन्य संघर्ष, प्रम–विवाह के आड़े आया हुआ जाति एवं वर्ण–भेद, उसमें निहित संघर्ष, युवा वर्ग का मॉरिशस समाज में प्रचलित सामाजिक ,आर्थिक ,राजनीतिक विषमता ,बेकारी के विरोध में उठता आन्दोलन ,उनके द्वारा अपने हक के लिए किया हुआ संघर्ष आदि का मार्मिक एवं यथार्थ चित्रण किया है । अभिमन्यु अनत के उपन्यासों के सिर्फ पुरूष–पात्रों (नायक) ने ही संघर्ष की प्रक्रिया को जारी नहीं रखा है ,तो उनके उपन्यास के नारी–पात्रों (नायिका) ने भी संघर्ष का स्वीकार कर,उसमें ही अपने जीवन की सार्थकता मानी है। परिणाम स्वरूप वे अन्य नारी जीवन के लिए एक श्रद्धा एवं प्रेरणा स्थान बन गयी है।

अभिमन्यु अनत अपने अधिक तर उपन्यासों में प्रेम विवाह की समसया का चित्रण करते हैं। वे अपने उपन्यासों में प्रेम–विवाह के आड़े आनेवाले वर्ण एवं जातीय भेदभाव,ऊँच-नीच आदि का विरोध करने के लिए संघर्ष की प्रक्रिया को जारी रखते हैं । जैसे ' आन्दोलन ' उपन्यास में रवि–सलमा हिदू मूसलमान होने के कारण विवाह नहीं कर सकते । लेकिन वे दोनों अपना संघर्ष जारी रखते हैं । उपन्यासकार ऐसा इसलिए दिखाते है क्योंकि जब यह उपन्यास लिखा गया तब हालात ऐसे नहीं थे कि हिंदू लड़का – मुस्लिम लड़की से ब्याह करे । उस समय संघर्ष करने के लिए प्रेरणा देना आवश्यक था । उस प्रेम की सफलता के लिए संघर्ष की प्रक्रिया को जारी रखने के लिए वैसा ही आवश्यक था । वे स्वयं उपर्युक्त सत्य का सपष्टीकरण देते है ।

अभिमन्यु अनत ने अपने अन्य उपन्यासों जैसे ,' आन्दोलन ' ,' एक बीधा प्यार ' ,' तपती दोपहरी ' ,' कुहासे का दायरा ' ,' पर पगडंड़ी नहीं मरती ' ,' लाल पसीना ' आदि में

मालिक मजदुरों में सामाजिक , आर्थिक भेद–भाव और तज्जन्य संघर्ष साथ ही युवा वर्ग का राजनीतिक विषमता , भाई–भतीजावाद , बेकारी अदि के विरोध में किया हुआ विद्रोह एवं अपने हक की प्राप्ति के लिए मॉरिशस समाज की बेहतरी के लिए किया हुआ संघर्ष भी है। इस संघर्ष में वे अपनी नौकरी की पर्वा नहीं करते बल्कि संघर्ष में ही अपने जीवन की सार्थकता मानते हैं । वे संघर्ष के सहारे ही मजदुरों पर हुए अन्याय का प्रतिकार कर, उन्हें अपना हक दिलाने का पूरा प्रयत्न करते हैं ।

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों के नारी पात्र (नायिका) भी संघर्ष को अत्याधिक महत्व देती हैं । एक ओर वह अपने प्रेमी के संघर्ष को अपना मानती है और मजदुरों को उनके हक दिलाने में प्रयत्न करती हैं। तो दूसरी ओर वह संघर्ष के बल पर ही भ्रष्ट राजनीति की पोल खोलती है , बड़ी बड़ी हस्तियों को हिलाकर रख देती है। जैसे ' पर पगडंडी नहीं मरती ' की अंजू नायक विक्रम के संघर्ष को अपना मानती है । विक्रम के अपाहिज होते हुए भी वह उसे अपना जीवन–साथी मानकर उसके कार्य को पूरा करने लिए, कोठी के मजदुरों को न्याय दिलाने के लिए पूरे साहस के साथ संघर्ष के प्रण को जारी रखती है । साथ ही ' मुड़िया पहाड़ बोल उठा ' की नायिका नेहा भी अपने संघर्ष के प्रण के आधार पर ही फैक्टरी में कार्यरत महिला मजदुरों की मजदूरनेता बन उनके हक वापस दिलाती है । वह हर संकट का सामना कर, संघर्ष करते हुए महिला–मजदुरों के हक की सुरक्षा के लिए , अपने श्रम से मन्त्रि परिषद द्वारा 'फैक्टरी का राष्ट्रीयकरण' करवाती है । तो ' चुन–चुन चुनाव ' उपन्यास की नायिका स्वस्ति जो पढ़ी–लिखी है , सीधे राजनीति में प्रवेश कर राजनीतिक मूल्यों की सुरक्षा के लिए , आम आदमी के कल्याण के लिए, भ्रष्ट राजनेताओं का विरोध कर, अपने संघर्ष के बल पर चुनाव में विजय प्राप्त करती है। वही आम जनता को सतर्क करती है कि अपने हक के लिए सरकार से प्रश्न करें । अतः यहाँ स्पष्ट है अभिमन्यु अनत के उपन्यास के नारी पात्र भी संघर्ष में विश्वास रखते है ।

अभिमन्यु अनत ने जो ऐतिहासिक उपन्यास लिखे , जैसे ', 'लाल पसीना ', ' गांधी जी बोले थे ' , ' और पसीना बहता रहा ' वे सभी आप्रवासी भारतीय मजदुरों द्वारा किये गये संघर्ष के ऐतिहासिक सत्य को ही प्रस्तुत करते हैं । यह उन आप्रवासी भारतीय मजदुरों के संघर्ष की कहानी है , जिन्होंने अपने खून और पसीने को बहाकर द्वीप को समृद्ध किया है । किन्तु

उन्हें सिर्फ निरंतर अपमान , पीड़ा मीली । पर उन्होंने अपनी मुक्ति के हेतु निरंतर संघर्ष किया है । यहाँ गांधीजी द्वारा प्राप्तसंघर्षके लिए प्रेरणा भी अत्यधिक महत्वपूर्ण बात है ।

अभिमन्यु अनत के उपन्यास ' हड़ताल कल होगी ' का जहाँ तक सवालहै,वह भी संघर्ष से परिपूर्ण है । प्रस्तुत उपन्यास की आत्मा ही ' वर्ग–संघर्ष ' है । इसमें मुख्य रूप से धनी–निर्धन,शोषक–शोषित. ,काले–गोरे आदि का भेद भाव एवं संघर्ष है । ' हड़ताल कल होगी ' मॉरिशस का अपना सामयिक सत्य है। प्रस्तुत उपन्यास का नायक अमित दोहरा संघर्ष करता है । एक ओर वह प्रेम–संधर्ष को जारी रखता है। तो दूसरी ओर मजदुरों को संगठित करके उनके हक की लड़ाई लड़ने मेंअपने को समर्पित करता है । प्रस्तुत उपन्यास से स्पष्ट होता है कि मॉरिशस समाज में स्थित सामाजिक , आर्थिक , वैचारिक विषमता के परिणाम स्वरूप वहाँ दो ऐसे वर्गों का निर्माण हुआ है जिसमें हमेशा से किसी न किसी वजह से संघर्ष होता दिखाई देता है । मॉरिशस समाज में आर्थिक विषमता के कारण एक ओर मिल–मालिक और मजदुरों में आर्थिक तनाव है। मिल–मालिक मजदुरों को तीसरे दर्जे का नागरिक मानते है। परिणाम स्वरूप मजदूर अपने हक के लिए संघर्ष करते हुए दिखाई देता है। दूसरी ओर फ्रॉसीसियों द्वारा निर्मित सामाजिक विषमता के कारण मॉरिशस समाज में वर्ण भेद की समस्या है । वहाँ गोरे फ्रॉन्सीसी का काले–वर्ण के लोगों के साथ अमानवीयता का व्यवहार है । परिणाम स्वरूप काले–वर्ण के लोग अपने हक के लिए संघर्ष करते हैं। किन्तु उपर्युक्त दोनों आर्थिक – सामाजिक विषमताओं में निहित अमानवीयता का खातमा करने के लिए जब नवीन विचारधाराओं की आवश्यकता होती है,तो फिर पुरानी–नई विचारधाराओं में अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष होता है।

प्रस्तुत उपन्यास ' हड़ताल कल होगी ' में अमित–जानीन वर्ण–भेद का तीव्र विरोध कर,अपने प्रम को सफल बनाना चाहते हैं । किन्तु बड़ी–बड़ी हस्तियाँ यह होने नहीं देती । पर अमित–जानीन अपना संघर्ष जारी रखते हैं । प्रस्तुत उपन्यास का नायक अमित मिल–मालिकों का तीव्र विरोध कर मजदुरों को भी न्याय दिलाना चाहता है। उसके लिए वह तीव्र संघर्ष करता है । कन्तु उसे फ्रॉन्सीसी पूँजीपति असामाजिक तत्वों द्वारा अपने रास्ते से हटा दते है। किन्तु अमित फिर से पूरे जोश से संघर्ष करने के प्रण से संचालित होकर मजदुरों के हक की सुरक्षा की लड़ाई और इसी लड़ाई के बलपर रंग–भेद की लड़ाई को भी जारी रखता है। अतः प्रस्तुत

उपन्यास ' हड़ताल कल होगी ' में भी उपन्यासकार ने ' वर्ग संघर्ष ' को अत्याधिक महत्व देते हुए उसे मार्मिकता से चित्रित किया है ।

उपर्युक्त विस्तृत विवेचन के आधार पर निष्कर्ष रूप कहा जा सकता है कि ,अभिमन्यु अनत ने ' वर्ग संघर्ष ' को अपने उपन्यास लेखन का एकमात्र आधार एवं केद्रबिंदू माना है। वे मार्क्सवाद से प्रभावित है । अतः वे वर्ग संघर्ष में विश्वास रखते है । परिणाम स्वरूप वे अपने उपन्यासों में संघर्ष की प्रक्रिया को जारी रखते हैं। वे आशावादी उपन्यासकार है । वे मानते है कि अगर आज किए हुए संघर्ष को सफलता नहीं मिली है तो कल वह जरूर प्राप्त होगी । इसी कारण वे अपनी रचनाओं में संघर्ष को तब तक जारी रखना चाहते है,जब तक समाज में व्याप्त विषमताएँ खत्म न हो जाए । वे अपनी लेखनी के माध्यम से नव–युवकों को संघर्ष के लिए प्रेरणा देते हैं ।